मौसलपर्व कथासार

मौसलपर्व में आठ अध्याय तथा २९० श्लोक हैं।

प्रथम अध्यायः--- ऋषियों के शाप से साम्ब के पेट से मूसल की उत्पत्ति

महाभारत युद्ध के पश्चात् जब छत्तीसवाँ वर्ष का प्रारम्भ हुआ तब राजा युधिष्ठिर अपने राज्य में कई अपशकुन देखने लगा। भयंकर मेघध्वनि के साथ कंकड बरसानेवाली प्रचण्ड आँधी चलने लगी। आकाश से पृथ्वी पर अङ्गार बरसानेवाली उल्काएँ गिरने लगीं। सूर्यमण्डल धूल से आच्छन्न हो गया। उदयकाल में सूर्य तेजोहीन प्रतीत होता था और सूर्यमण्डल अनेक कबंधों से युक्त दिखाई देता था। चन्द्रमा और सूर्य दोनों के चारों ओर भयानक घेरे दिखाई पडते थे। कुछ दिनों के बाद राजा युधिष्ठिर ने यह समाचार सुना कि मूसल को निमित्त बनाकर वृष्णिवंशियों में महान् युद्ध हुआ और उनका नाश हो गया। यह बात सुनकर पाण्डव बहुत दुःखी हुए। श्रीकृष्ण के विनाश की बात पर उन्होंने विश्वास नहीं किया। जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने यादवों के कलहवृत्तान्त समग्र सुनाया। उसने कहा कि हे राजन्! एक समय की बात है, विश्वामित्र, कण्व और तपोधन नारद श्रीकृष्ण को देखने द्वारका गये। उस समय कुछ यादव श्रीकृष्ण के पुत्रों में से एक साम्ब को गर्भवती स्त्रीवेष में विभूषित करके उनके पास ले गये और मुनियों से पूछा कि यह स्त्री अमित तेजस्वी बभ्रु की पत्नी और गर्भवती है। आप लोग दिव्यदृष्टि संपन्न हैं। इसलिये कहिए कि इसके गर्भ से क्या पुत्र पैदा होगा? या पुत्री? उनके दुर्व्यवहार को जानकर ऋषिलोग क्रुद्ध हुए और बोले कि श्रीकृष्ण का यह पुत्र साम्ब एक भयंकर लोहे का मूसल उत्पन्न करेगा जो वृष्णि और अन्धकवंश के विनाश का कारण होगा। श्रीकृष्ण और बलराम के सिवा समस्त यादव कुल का नाश होगा। बलराम स्वयं अपने शरीर को त्यागकर समुद्र में चले जायेंगे। श्रीकृष्ण जब भूतल पर सो रहे होंगे उस समय जरा नामक व्याध अपने बाणों से उन्हें बींध डालेगा।

ऐसा कहकर ऋषिगण श्रीकृष्ण के पास चले गये। यह सब सुनकर श्रीकृष्ण ने वृष्णिवंशियों से कहा कि ऋषियों ने जैसा कहा वैसा ही होगा। दूसरे दिन सबेरे होते ही साम्ब ने मूसल को जन्म दिया, वृष्णि और अन्धककुल के विनाश का कारण था। यदुवंशियों ने उस मूसल को राजा उग्रसेन को दिया। खिन्न राजा ने उसको चूर्ण करा दिया। राजा की आज्ञा से सेवलों ने लोहचूर्ण को समुद्र में फेंक दिया। राजा ने अपने राज्य में मदिरा तैयार न करने का आदेश दिया। इस का उल्लङ्घन करनेवाले को बन्धुसहित शूली पर चढा दिये जाने की घोषणा की। प्रजा भी भय से मदिरा न बनाने का तथा न पीने का नियम बना लिया।

द्वितीय अध्यायः---द्वारका में भयंकर उत्पात--

वृष्णि और अन्धक वंश के लोग भयंकर उत्पात का अनुभव करते थे। उधर

काल विकृत पुरुष वेष में उनके घर में प्रत्यक्ष होता और अदृश्य होता था। उसे मारने के लिये उसके ऊपर धनुर्धर बाणों का प्रहार करते थे। लेकिन उनका प्रयत्न निष्प्रयोजन होता था। यादव वंश के विनाश के सूचक प्रतिदिन भयंकर आँधी उठने लगी। अत्यन्त बडे बडे मूषक सडकों पर इधर
उधर घूमते थे। रात में सोये हुये मनुष्यों के केश और नख काटकर खाते थे। उनके घरों में मैनाएँ दिन रात बिना विराम ध्वनि करती थीं। सारस पक्षी उल्लू आदि के कठोर ध्वनि का अनुकरण करती थीं। उनके घरों में सफेद पंख और लाल पैरोंवाले कबूतर घूमने लगे। गाओं के पेट से गदहे, खच्चरियों से हाथी, कुतियों से बिडाल, नकुल से चूहे पैदा होने लगे। उदय और अस्त के समय सूर्यदेव प्रतिदिन कबंधों से घिरे दिखाई पडता था। उन्हें अपने भोजन में हजारें कीडें दिखाई देने लगते थे। श्रीकृष्ण का पाञ्चजन्य ध्वनि राक्षस के भयंकर स्वर जैसा लगता था। काल के वैपरीत्य को देखकर, और त्रयोदशी तिथि में अमावास्या का प्रभाव जानकर भगवान् श्रीकृष्ण ने सब लोगों से कहा कि महाभारत युद्ध के समय में जैसा योग था वैसा ही आज भी है। यह हम लोगों का विनाश का सूचक है। भारतयुद्ध के बाद अब छत्तीसवाँ वर्ष आ पहुँचा। पुत्र शोक से संतप्त गान्धारी ने हमारे कुल के लिये जो शाप दिया उसका सफल होने का समय आ गया। ऐसा कहकर श्रीकृष्ण ने उन्हें तीर्थयात्रा के लिए आज्ञा दी।

तृतीय अध्याय--कृतवर्मा तथा अन्य यादवों का परस्पर संहारः--

वैशम्पायन ने जनमेजय से कहा कि द्वारका के लोग रात को स्वप्न में देखते थे कि एक काले रंग की भयंकर आकृतिवाली स्त्री अपने घरों मे प्रवेश करके स्त्रियों के सौभाग्य सूत्र लूटती हुई द्वारका में घूमती थी। वह मनुष्यों को पकडकर खाती थी। श्रीकृष्ण के सलाह के अनुसार वृष्णि और अन्धक वंशी अपने कुटुम्ब के साथ तीर्थयात्रा करने का निश्चय किये। खाने पीने के साथ रवाना होकर प्रभासक्षेत्र पहुँचे और वहाँ समुद्र के तट पर वीर यदुवंशी डेरा डालकर रहने लगे। योगवेत्ता और ज्ञानकुशल उद्धव उनसे बिदा लेकर वहाँ से चला गया। यादव मदिरा पीकर नृत्य करते खुशी में थे। मदिरा पान से उन्मत्त सात्यकि कृतवर्मा का उपहास तथा अपमान किया। प्रद्युम्न उनके वचनों का समर्थन किया। यह सुनकर अत्यंत कुपित कृतवर्मा ने बायें हाथ से इशारा करते सात्यकि का अपमान किया। उसने कहा कि कुरूक्षेत्र युद्ध में भूरिश्रवा की बाँह कट गयी थीं और वह पृथ्वी पर पड गया। ऐसी अवस्था में तू ने उसका वध किया। कृतवर्मा की यह बात सुनकर क्रुद्ध सात्यकि कृतवर्मा से बोला कि तू ने द्रोणपुत्र का सहायक बनकर रात में सोते समय द्रौपदी के पाँच पुत्रों का वध किया। उसी मार्ग में मैं चलता हूँ। ऐसा कहकर उसने श्रीकृष्ण के पास दौडकर तलवार से कृतवर्मा का सिर काट दिया। वहाँ के समस्त वीर एक दूसरे का वध करने लगे। सात्यकि और प्रद्युम्न प्रतिपक्षियों के हाथ से मारे गये। उन दोनों को मारा गया देख श्रीकृष्ण ने कुपित होकर एक मुट्टी भर का घास उखाड लिया। वह वज्र के

समान भयंकर लोहे का मूसल बन गयी। श्रीकृष्ण ने उनके सम्मुख आनेवाले को मार गिराया। जब श्रीकृष्ण अपने पुत्र साम्ब, चारुदेष्ण, प्रद्युम्न तथा पोते अनिरुद्ध को भी मारा गया देख अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और शेष बचे हुए सब यादवों को मार डाला। बभ्रु और दारुक ने श्रीकृष्ण से कहा कि हम तीनों बलराम के पास चलेंगे।

चतुर्थ अध्याय---बलराम और श्रीकृष्ण का परमधाम गमन :--

बभ्रु, दारुक और श्रीकृष्ण तीनों बलराम का पता लगाते निकले। कुछ देर के बाद उन्होंने
एक वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान करता हुआ बलराम को देखा। हस्तिनापुर जाकर अर्जुन को यादवों का विनाश समाचार सुनाने के लिये श्रीकृष्ण ने दारुक को आज्ञा दी। दारुक के चले जाने पर श्रीकृष्ण ने स्त्रियों की रक्षा के लिये द्वारका चले जाने के लिये बभ्रु को आदेश दिया। इतने में एक महान् मूसल बभ्रु के ऊपर गिर पडा और उसका प्राण ले लिया। श्रीकृष्ण द्वारका की स्त्रियों की रक्षा भार सौंपने द्वारका गये और अपने पिता वसुदेव को यह सौंप दिया और तपस्या करने बलराम के पास प्रस्थित हुए। वन पहुँचकर समाधि में बैठे बलराम को देखे। श्रीकृष्ण ने उनके मुख से श्वेतवर्ण विशालकाय सर्प को निकलते देखा। वह महासागर की ओर गया और वहाँ पूर्वशरीर को त्यागकर सहस्रमस्तक के रूप में प्रकट हुआ। दिव्य नागों ने उनका स्वागत किया। भाई बलराम के परमधाम जाने के पश्चात् भगवान् श्रीकृष्ण ने तीनों लोकों की रक्षा, तथा दुर्वास के वचन पालन करने के लिये अपने परम धाम पधारने का समय प्राप्त हुआ समझकर इन्द्रियवृत्तियों का निरोध करके समाधि अवस्था में पृथ्वी पर लेट गये। उसी समय जरा नामक एक व्याध वहाँ पहुँचा और श्रीकृष्ण को मृग समझकर बाण मारकर उनके पैर तल में घाव कर दिया। मृग को पकडने वह निकट आया और श्रीकृष्ण को देखकर वह मन ही मन बहुत डर गया। उसने भगवान का शरण लिया। देवगण ऋषिगण भगवान् श्रीकृष्ण का स्वागत किया। तत्पश्चात् वे अपने धाम पहुँचे।

पाँचवाँ अध्याय--- अर्जुन द्वारका में श्रीकृष्ण की पत्नियों की दशा देखकर दुःखी होना:--

दारुक ने कुरुदेश जाकर पाण्डवों को मौसल युद्ध में वृष्णिवंश का नाश समाचार बताया। अर्जुन श्रीकृष्ण से मिलने दारुक के साथ द्वारका गया। उसने देखा कि अनाथ स्त्री की भान्ति द्वारका शोभा विहीन हो गयी। श्रीकृष्ण के न होने से उनकी सोलह हजार अनाथ स्त्रियाँ अर्जुन को देखकर विलाप करने लगीं। उन्हें देखकर अर्जुन आँसू बहाते रोने लगा और मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पडा। सत्यभामा, रुक्मिणी आदि रानियाँ वहाँ दौड आयीं और उसे देखकर विलाप करने लगीं। अर्जुन उन्हें आश्वासन देकर अपने मामा वासुदेव से मिलने गया।

षष्ठ अध्याय --अर्जुन और वासुदेवजी की बातचीत :--

पुत्र शोक से संतप्त वसुदेव को देखकर अर्जुन अत्यंत दुःखी हुआ। नेत्रों में आँसू भर आये और उसने मामा के पैर पकड लिया। वसुदेव ने अपनी दोनों भुजाओं से अर्जुन को उठाकर छाती से लगा लिया। अपने पुत्रों की याद करते रोने लगा। वसुदेव बोला कि हे अर्जुन! तुम्हारे प्रिय शिष्य सात्यकि और प्रद्युम्न के अन्याय से वृष्णिवंश का नाश हो गया। जब सभी लोग एक दूसरे के हाथ से मारे गये तब उन्हें उस अवस्था में देखकर श्रीकृष्ण मेरे पास आकर बोला कि आज वृष्णिवंश का नाश हो गया। अर्जुन द्वारका आनेवाले हैं। यह वृत्तान्त उनसे कहना। स्त्री और बच्चों की रक्षा में अर्जुन विशेषरूप से ध्यान देंगे। वे ही आपका और्ध्वदेहिक संस्कार करेंगे। अर्जुन के चले जाने पर तत्काल ही यह नगरी सुमुद्र में डूब जायेगी। मैं बलराम के साथ रहकर काल की प्रतीक्षा करूँगा। हे पार्थ! श्रीकृष्ण के आदेश का पालन करो।
निश्चिन्त होकर मैं अपने प्राणों का त्याग करूँगा।

सप्तम अध्याय- समुद्र में द्वारकापुरी डूब जाना

वसुदेव की बातें सुनकर अर्जुन अत्यन्त खिन्न हुआ और कहा कि मामाजी! राजा युधिष्ठिर का भी परलोक गमन का समय निश्चय ही आ गया है। यह वही काल प्राप्त हुआ है ऐसा समझें। अब मैं वृष्णिवंश की स्त्रियों, बालकों और बूढों को अपने साथ इन्द्रप्रस्थ ले जाऊँगा। मामा से ऐसा कहकर अर्जुन ने वृष्णिवंशी के मन्त्रियों से मिला और कहा कि हे अमात्य! समुद्र इस सारे नगर को डुबा देगा। इसलिये वृष्णि और अन्धकवंश लोगों को इन्द्रप्रस्थ ले जाऊँगा।

इन्द्रप्रस्थ चलने पर श्रीकृष्ण के पौत्र वज्र आपका राजा बनेगा। जाने के लिये पूरी व्यवस्था कीजिए। सातवें दिन सुबह यहाँ से बाहर निकलेंगे। ऐसा कहकर अर्जुन श्रीकृष्ण के महल में उस रात को निवास किया। सबेरे होते ही वसुदेव ने इन्द्रियनिग्रह के द्वारा उत्तम गति प्राप्त किया। अर्जुन ने उनका दहन संस्कार किया। चिता की प्रज्वलित अग्नि में बैठकर वसुदेव के साथ उनकी चार पत्नियाँ देवकी, भद्रा, रोहिणी तथा मदिरा भी परलोक प्राप्त किये। तदनन्तर आप्त पुरुषों के द्वारा बलराम तथा श्रीकृष्ण दोनों के पार्थिव शरीर का अन्वेषण कराके उनका भी दाहसंस्कार किया। तदनन्तर सातवें दिन सब के साथ अर्जुन द्वारका से इन्द्रप्रस्थ निकला। अर्जुन नगर का जो जो भाग छोडता आगे बढा उसे समुद्र ने अपने जल से डुबा दिया। रास्ते में कुछ डाकुओं ने उन पर हमला किया और कुछ सुन्दर स्त्रियों को लूट ले गये। अर्जुन की धनुर्विद्या निष्फल हो गयी। उसने सोचा कि यह भी दैव का विधान है। शेष जनों को लेकर अर्जुन इन्द्रप्रस्थ पहुँचा। उसने सात्यकि के पुत्र यौयुधानि को सरस्वती के तटवर्ती देश का अधिकारी तथा वज्र को इन्द्रप्रस्थ का राजा बनाया। रुक्मिणी, गान्धारी, शैव्या, हैमवती तथा जाम्बवती ने अग्निप्रवेश करके परलोक प्राप्त किये। सत्यभामा तथा

अन्य देवियाँ तपस्या करने वन चली गयीं। इस प्रकार यथोचित व्यवस्था करके अर्जुन व्यासमहर्षि का आश्रम जाकर उनका दर्शन किया।

अष्टम अध्याय-- अर्जुन और व्यास महर्षि की बातचीतः--

आश्रम में प्रवेश करके अर्जुन ने एकान्त में बैठे व्यास महर्षि को देखा। उनके पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम किया। उनका मन अशान्त था। इसका कारण पूछने पर अर्जुन ने उनसे कहा कि हे भगवन्! श्रीकृष्ण बलराम के साथ देहत्याग करके अपने परम धाम को चले गये। मौसलयुद्ध में वृष्णि वंशियों का नाश हो गया। डाकुओं से अनाथ स्त्रियों की रक्षा में मैं असफल हो गया। मेरा अस्त्र ज्ञान लुप्त हो गया। वासुदेव के बिना मैं जीना नहीं चाहता। हे महर्षे! आप मेरे कल्याण का उपदेश दीजिए। व्यास ने कहा कि हे कुन्तीकुमार! समस्त यदुवंशी देवताओं के अंश हैं। वे श्रीकृष्ण के साथ यहाँ आये थे। फिर उनके साथ चले गये। उनके लिये शोक करना उचित नहीं है। वासुदेव साधारण पुरुष नहीं। वे ही चतुर्भुज नारायण थे। उन्होंने पृथ्वी का भार उतारकर फिर अपने धाम चले गये। आप लोगों ने भी अपना कर्तव्य पूर्ण कर लिया।

अब तुम्हें भी परलोकगमन का समय आया है। उत्पत्तिकाल में मनुष्य की बुद्धि, तेज और ज्ञान का विकास होता है और विपरीत समय में इन सबका नाश हो जाता है। उत्पत्ति तथा संहार का कारण काल ही है। तुम्हारे अस्त्र शस्त्रों का प्रयोजन पूरा हो गया है। इसलिये जैसे आये वैसे ही चले गये। अब तुम लोगों को उत्तम गति प्राप्त करने का समय आया है। यही आप लोगों का परम कल्याण है। अर्जुन व्यास जी से आज्ञा पाकर हस्तिनापुर चले गये। उसने युधिष्ठिर से मिलकर सारा वृत्तान्त सुनाया।

।। मौसलपर्व कथासार समाप्त ।।